प्रश्नोत्तर

गुलमर्ग (जम्मू-कश्मीर) १६-७-'५९

क्या हमें आज का सेवाकार्य आखिर तक करना चाहिए ?

विनोबाजी : हमारी एक राय है कि इन्सान को एक उम्र के बाद काम छोड़ देना चाहिए और आत्म-चिन्तन में लगना चाहिए। फिर जो भी उसके पास आये, उसे वह सलाह दे सकता है। अगर इन्सान यह न करे तो उसका पूरा विकास नहीं होता। उसे लगता है कि सेवा आखिर तक करनी चाहिए। लेकिन यह लोभ ही है। कितने ही ऐसे मन्त्री हैं, जो अपना स्थान छोड़ते ही नहीं। उससे उनका भी नुकसान होता है और देश का भी। लोग समझते हैं कि इनके बिना हमारा नहीं चलेगा और वे भी समझते हैं कि हमारे बिना देश का नहीं चलेगा। दोनों चीजें गलत हैं। उन्हें चाहिए कि अपना स्थान छोड़कर ऊँचे चिंतन में लगें और जवानों को सलाह दें। अगर वे ऐसा नहीं करते तो नये-नये मनुष्य आगे नहीं आ पाते। फिर उनके मरने के बाद जो आगे आयेंगे, उन्हें कोई अनुभव नहीं रहता है। इसलिए नये जवानों को आगे आने देना चाहिए और सलाह देनी चाहिए, जिससे उनका विकास हो और जवानों का भी।

करमन की गति न्यारी

सूरदास का एक सुन्दर भजन है : 'ऊधो करमन की गति न्यारी।' उसमें कहा है कि भगवान ने आँखवालों को हरिदर्शन की लालसा नहीं दी और अन्धे सूरदासजी दर्शन के लिए तड़पते हैं। आँखवालों को, जो कि बिलकुल खुली आँख से देख सकते हैं, हरिदर्शन की प्यास नहीं होती। वे तो चाहते हैं कि गुलमर्ग जायँ, वहाँके गुल देखें या और कोई भोगविलास करें और अन्धे सूरदास को श्याम भगवान को देखने की प्यास है। "सूर श्याम मिलने की आशा।" क्या कर्म की गति है।

सत्र रखनेवाले सेवा करते हैं

तुलसीदास ने लिखा है कि जैसे एक मनुष्य सावन में अन्धा बना, तब सृष्टि हरी-भरी थी, इसलिए उसे जिन्दगी भर हरा ही हरा सूझता है। वैसे मुझे रामनाम ही सूझता है। "मोहीं तो सावन के अन्धे जो सूझत रंग हरो।" मिल्टन को जब तक आँख थी, तब तक वह राजनीति पर ही लिखता रहा। लेकिन अन्धा होने के बाद उसकी राजनीति खत्म हुई। फिर उसने भगवान का चिन्तन शुरू किया और अपनी कन्या को 'पैराडाइज लास्ट' डिक्टेट कराया। 'पैराडाइज लास्ट' के कारण ही मिल्टन मशहूर है। वह कविता इंग्लैंड की कविता में एवरेस्ट के शिखर के जैसी मानी जाती है। मिल्टन से वह इसीलिए लिखा गया कि वह अन्धा बना। लेकिन जब वह अन्धा बना, तब पहले-पहल उसे लगा कि अब मुझसे क्या सेवा होगी ? क्योंकि वह राजनीति को सेवा समझकर ही उसमें काम करता था। उस समय की उसकी एक कविता है, जिसमें उसने लिखा है कि जब कि उसने मेरा प्रकाश छीन लिया है तो वह मुझसे क्या उस सेवा की अपेक्षा करेगा, जो प्रकाश में की जाती है ? लेकिन वह भी सेवा करते हैं, जो सत्र रखते हैं।

मैं भी मानता हूँ कि मैं कल अन्धा हो जाऊँगा तो आज जितनी सेवा करता हूँ, उससे ज्यादा सेवा करूँगा। सेवा आँख पर निर्भर नहीं है। अन्धे के लिए कश्मीर की सारी खूबसूरती बेकार है। लेकिन उसके लिए भी कोई खूबसूरती है या नहीं ? है, वह तो अन्दर है।

उसीके हुक्म से काम होता है

प्रश्न :—जो टेक्निशियन्स हैं, वे कैसे कन्व्हर्ट होंगे ?

विनोबाजी :—"हुक्म रजाई चल्लणा नानक लिखिया नाली, नानक हुकुमे जे बुझे त हउमे कहे न कोई" खत्म हो गया। उनको क्या कन्व्हर्ट करना है ? वे हैं कौन ? उनकी क्या हस्ती है ? वे तो नाचीज हैं।

अभी हम पहाड़ चढ़कर आये तो क्या अपनी ताकत से आये ? आखिरी दो दिन आसमान साफ रहा, इसीलिए हम यहाँ आ सके। अगर उस वक्त बारिश होती तो हम खत्म हो जाते। गजनी के मुहम्मद ने हिंदुस्तान पर १७ दफा हमला किया था। वह कश्मीर पर हमला करने आया था और लोरेन से उसे वापस जाना पड़ा। उसी लोरेन से मैं पीर चढ़कर यहाँ आया हूँ। जहाँ उसको भागना पड़ा, वहाँ हमें नहीं भागना पड़ा। वह जीतने के लिए आया था और हम भी जीतने के लिए आये हैं। लेकिन उसका जीतने का तरीका दूसरा था और हमारा तरीका दूसरा है। जैसे सिकन्दर पंजाब को जीतने आया था, लेकिन उसे वापस लौटना पड़ा। वह दुनिया को जीतना चाहता था। उस वक्त पटने को जीता—याने हिंदुस्तान को जीता और दुनिया के मालिक बन गये—ऐसा माना जाता था। लेकिन सिकन्दर का यहाँपर पोरस से मुकाबला हुआ। उसने सोचा कि पटने में तो पोरस से भी ताकतवर राजा होंगे। इसलिए उसके मन में अन्दर से हिचक पैदा हुई। फिर भी वह आगे बढ़ा। लेकिन उसकी फौज ने आगे बढ़ने से इन्कार किया। वह जीतने के लिए आया था, लेकिन हारकर चला गया। उसी पंजाब में महाराष्ट्र से एक शख्स नामदेव आया और उसने पंजाब को इस तरह जीता कि किसीको पता भी नहीं चला। नामदेव का दुनिया को जीतने का तरीका ही अलग था। "मन जीते जग जीत" नामदेव के भजन पंजाब के लोकमानस में इतने घुल-मिल गये थे कि गुरुग्रंथ में उसके भजन लेने पड़े, यद्यपि नानक गुरुओं में से नहीं था। जैसे मैं नामदेव विरुद्ध सिकन्दर की बात सुनाता था वैसे अब सुनाऊँगा कि बाबा विरुद्ध गजनी का मुहम्मद। मैंने लोरेन में ईश्वर के खिलाफ सत्याग्रह किया कि अगर मैं पीर न लाँघ सका तो वापस पंजाब चला जाऊँगा। यह सुनते ही ईश्वर घबड़ाया। उसने सोचा कि अगर यह शख्स वापस लौटा तो अपनी फजीहत है। इसलिए उसने हमें आगे बढ़ने दिया। ●

अनुक्रम

१. खालिस खिदमत करने का काम बहनें ही कर सकती हैं
रामबन २७ अगस्त '५९ पृष्ठ ७७५
२. राष्ट्र-निर्माण हिंसा से नहीं, सहयोग से होगा
थाना की मंडी २५ जून '५९ ,, ७७६
३. क्या हमें आज का सेवाकार्य आखिर तक करना चाहिए ?
गुलमर्ग १६ जुलाई '५९ ,, ७७८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।
www.vinoba.in